प्राक्कथन

प्राक्कथन

❑ प्रेरणा एवं विषय चयन -

नाटक तथा एकांकियों के प्रति मेरा आकर्षण कॉलेज के दिनों से ही बढ़ता गया था। खासकर नाटकों की अपेक्षा एकांकियों की ओर कुछ ज्यादा ही खिंचती चली गई। इसका प्रमुख कारण था उनकी लघुता। जो काम नाटक करता है, वही काम एकांकी कम समय में कर देता है। दूसरा एक और खास कारण यह था कि हम इसे मंचित भी कर सकते थे। 14 सितंबर के मौके पर हम मित्र-परिवार मिलकर कॉलेज में दो-तीन एकांकियों का मंचन बड़े ही उत्साह के साथ करते थे। इसलिए कम-से-कम साल के इन दिनों में हम ऐसे एकांकियों की तलाश में लगे रहते कि जिनका कॉलेज के मंच पर मंचन किया जा सके। बी.ए. में हमने 'जान से प्यारे' इस एकांकी का मंचन किया और कॉलेज के अन्य छात्रों द्वारा उसे काफी प्रतिसाद भी मिला। एम्.ए. में भी हमने एक ऐसे एकांकी को मंचित किया जिसे हमारे ही एक मित्र ने मराठी फिल्म 'सातच्या आत घरात' से प्रेरणा लेकर लिखा था। इस एकांकी में सात बजे से पहले घर आने का नियम लड़कियों पर लागू न कर लड़कों पर लागू किया और आधुनिक युग की बदलती स्थिति शायद ऐसी भी हो सकती है, इसकी झलक हास्य-व्यंग्य के माध्यम से दिखाने की कोशिश की। इस एकांकी के हास्य-व्यंग्य से सभी इतने प्रभावित हुए थे कि एकांकी देखने वाले हॉल में जगह कम पड़ने पर खिड़कियों पर चढ़कर भी एकांकी देख रहे थे। इस कारण हास्य-व्यंग्य एकांकियों की ओर मेरा आकर्षण बढ़ता गया। जब मैं एम्.फिल. शोध-कार्य के लिए विषय का चुनाव कर रही थी तब शंकर पुणतांबेकर का 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' हास्य-व्यंग्य एकांकी संग्रह मेरे हाथ लगा। अत: उसे पढ़ने के बाद मेरी रूचि तथा मेरे श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. मोहन जाधव जी की प्रेरणा और स्वीकृति पाकर मैंने इस संग्रह का अपने एम्.फिल शोध-कार्य के लिए चयन किया।

❑ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का महत्त्व -

सब से पहले मेरे सामने यह प्रश्न था कि, इस संग्रह पर इस से पहले किसी शोध-कर्ता ने शोध-कार्य किया है, या नहीं? खोज करने पर ज्ञात हुआ कि इससे पहले इस एकांकी संग्रह पर तो क्या बल्कि शंकर पुणतांबेकर के किसी भी साहित्य पर अब तक शोध

कार्य नहीं किया गया है। तब मैंने निश्चिंत मन से ''शंकर पुणतांबेकर के एकांकियों में हास्य-व्यंग्य'' ('बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह के संदर्भ में) इस विषय पर शोध- कार्य शुरू किया।

❑ लघु शोध-प्रबंध का विषय एवं उद्देश्य -

शंकर पुणतांबेकर के 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह की एकांकियों में हास्य-व्यंग्य के प्रयोग तथा उसके प्रभाव को स्पष्ट करना इस लघु शोध-प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य है।

शंकर पुणतांबेकर के जीवन का, उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर पड़ा हुआ प्रभाव स्पष्ट करना भी प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य है।

हास्य-व्यंग्य के स्वरूप एवं विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य के स्वरूप पर प्रकाश डालना प्रस्तुत शोध-कार्य का उद्देश्य है।

विवेच्य एकांकी संग्रह के एकांकियों के उद्देश्य को स्पष्ट करना तथा समाज से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों की अव्यवस्था, भ्रष्टाचार का एकांकियों में किस प्रकार उद्घाटन किया है, यह स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य है।

समाज में व्याप्त विसंगति, समस्याएँ और कमजोरियों के प्रति हास्य-व्यंग्य समाज को किस तरह से परिचित कराता है तथा समाज को उस पर सोचने के लिए मजबूर कर देता है, इस पर प्रकाश डालना इस लघु शोध-प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य है।

❑ अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए थे -

वर्तमान युग की त्रासदी, विसंगति, अमानवीय मूल्यों, समस्याओं आदि पर पुणतांबेकर ने अपनी सिद्धहस्त लेखनी चलाई है। इन्होंने व्यंग्य के सशक्त प्रयोग से समाज को इन कमजोरियों पर सोचने को विवश कर दिया है। इनकी व्यंग्य रचनाएँ समाज को परिवर्तन की ओर ले जाने का प्रयास करती है। इसमें हास्य-व्यंग्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इनके हास्य-व्यंग्य एकांकी संग्रह 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' को एम्.फिल. शोध-कार्य के लिए चुनने की अनुमति मार्गदर्शक गुरुवर्य डॉ. मोहन जाधव जी से मिलने पर मैंने इस विषय पर अध्ययन शुरू किया। इस विषय के अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उभरे-

1) शंकर पुणतांबेकर के जीवन का उनके साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा है?
2) शंकर पुणतांबेकर के एकांकियों में हास्य-व्यंग्य की भूमिका क्या है?
3) यह एकांकी पाठकों पर प्रभाव छोड़ने में कहाँ तक सफल रहे हैं?
4) हास्य और व्यंग्य दोनों एक ही है या अलग है?
5) इनकी हास्य-व्यंग्य एकांकियों का उद्‌देश्य क्या है?

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो जवाब मुझे प्राप्त हुए हैं, उन्हें उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का विवेचन किया है -

❑ लघु शोध-प्रबंध की सीमा और व्याप्ति -

हर शोध की अपनी सीमा और व्याप्ति होती है। इसके सामंजस्य से ही शोध-कार्य सरलता से संपन्न हो पाता है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का विवेचन किया है -

❊ प्रथम अध्याय - ''शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' :

प्रथम अध्याय के अंतर्गत शंकर पुणतांबेकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन किया गया है। पुणतांबेकर के अब तक की जीवन-यात्रा का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनका जन्म, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, परिवार आदि की जानकारी देते हुए उनके कृतित्व पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला है।

पुणतांबेकर का बचपन गरीबी में ही बिता है। उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगति, अव्यवस्था, अनाचार, समस्याएँ आदि का नजदिकी से अनुभव किया है। समाज की इन अभावों पर व्यंग्य के माध्यम से पुणतांबेकर ने तीखा प्रहार किया है। इनकी ज्यादा तर रचनाएँ केवल व्यंग्य रचनाएँ ही हैं। इनका प्रारंभिक साहित्य हास्य-व्यंग्य युक्त है लेकिन ज्यादातर व्यंग्य लेखन करने के कारण वे एक व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्‌ध हैं। व्यक्ति के जीवन की समस्याओं को इन्होंने सदा ही अपने व्यंग्य के माध्यम से उद्‌घाटित किया है। इनकी व्यंग्य रचनाएँ विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालती हैं। प्रस्तुत अध्याय में शंकर पुणतांबेकर की अब तक प्रकाशित हुई रचनाओं की सूची के साथ-साथ आनेवाले कुछ सालों में प्रकाशित होनेवाली

रचनाओं के नाम भी दिए गए हैं। यह अप्रकाशित रचनाएँ इस अध्याय की उपलब्धि है। स्पष्ट हो गया है कि पुणतांबेकर की रचनाओं पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा है और वे अपने समाज के प्रति सजग हैं।

*** द्वितीय अध्याय - ''हास्य-व्यंग्य का स्वरूप-विवेचन एवं विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का स्वरूप'' :**

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत हास्य-व्यंग्य के उद्भव एवं विकास पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए हास्य-व्यंग्य का स्वरूप-विवेचन किया है। साथ ही विवेच्य एकांकियों के स्वरूप को भी स्पष्ट किया गया है। हास्य और व्यंग्य का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार आदि के विषय में सैद्धांतिक जानकारी प्रस्तुत की गई है। हास्य-व्यंग्य का संबंध एवं पार्थक्य पर दोनों की अलग प्रवृत्ति, उद्देश्य में भिन्नता, परिणाम की भिन्नता आदि दृष्टि से विचार किया गया है। इस अध्ययन के उपरांत यह बात स्पष्ट हो गई है कि, हास्य और व्यंग्य एक न होकर वे एक-दूसरे के सहायक मात्र हैं।

इसके बाद एकांकी के उद्भव एवं विकास पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य के स्वरूप को स्पष्ट किया है, जिसे तीन भागों में बाँटा गया है -

1) सामाजिक हास्य-व्यंग्य एकांकी
2) राजनीतिक हास्य-व्यंग्य एकांकी
3) कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य एकांकी

इस से स्पष्ट हुआ है कि प्रस्तुत एकांकियों में अभिव्यक्त हास्य-व्यंग्य के माध्यम से पुणतांबेकर ने सामाजिक, राजनीतिक, कौटुंबिक स्तर पर व्याप्त समस्याएँ, अभाव, विद्रुपताओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

*** तृतीय अध्याय - ''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प'' :**

शंकर पुणतांबेकर के 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह के एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प पर प्रस्तुत अध्याय में प्रकाश डाला गया है। सभी एकांकियों का मुख्य उद्देश्य विसंगतियों पर व्यंग्य करना है। विवेच्य एकांकी 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति का उद्घाटन करता है। 'तितली' एकांकी आधुनिकता पर

प्रतीकात्मक व्यंग्य के रूप में दिखाई देता है। 'चूहें' एकांकी भी राजनीतिक अव्यवस्था पर एक प्रतीकात्मक व्यंग्य है। 'रंग में भंग' एकांकी द्वारा युवकों की बदलती मानसिकता तथा शिक्षा व्यवस्था को स्पष्ट किया है। 'इन्टरव्यू की तैयारी' शिक्षा व्यवस्था की त्रासदी तथा नियुक्तियों के खोखले दिखावे को स्पष्ट करने में सफल हुई है। अनोखेलाल नामक पात्र को लेकर लिखे कुछ एकांकियों में गंभीर विषय का उद्घाटन किया है तो कुछ एकांकियों में कौटुंबिक जीवन की परेशानियाँ, अभावों, समस्याओं से हास्य-व्यंग्य की निर्मिति हुई है। अत: कहना उचित होगा कि, इन एकांकियों के लेखन के पीछे शंकर पुणतांबेकर का प्रमुख उद्देश्य समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रुपताओं, समस्याओं पर व्यंग्य करना है।

इसके उपरांत एकांकियों के शिल्प पर विचार किया गया है। भाषा शिल्प, संवाद शिल्प, रंगमंचीय निर्देश, अभिनय निर्देश, पात्र सृष्टि, विषयकेंद्रिता, प्रतीक योजना आदि के माध्यम से विवेच्य एकांकियों के शिल्प पर प्रकाश डाला गया है। पुणतांबेकर ने एकांकियों के द्वारा व्यक्ति तथा समाज पर व्यंग्य किया है। हास्य-व्यंग्य के सुयोग्य मिलाप से विवेच्य एकांकियों का निर्माण किया गया है।

*** चतुर्थ अध्याय - ''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन'' :**

चतुर्थ अध्याय में 'मूल्यांकन' शब्द के अर्थ को स्पष्ट करते हुए विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन किया गया है। समस्त एकांकियों में निहित समस्याओं, विषयों, विसंगतियों को लेकर उनका महत्त्व स्पष्ट किया है। इन समस्त एकांकियों के द्वारा वर्तमान नेता, कानून व्यवस्था, प्रजातंत्र, प्रशासनिक तथा राजनीतिक क्षेत्र, भाषणबाजी, अफसरशाही, स्वास्थ्य विभाग, भ्रष्टाचार आदि के उपर किए गए हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन किया है। विवेच्य एकांकियों में निहित हास्य-व्यंग्य समाज को विसंगतियों, समस्याओं के प्रति जागरूक कर उन्हें इस पर विचार करने के लिए प्रवृत्त अवश्य करता है। इस दृष्टि से इन एकांकियों का हास्य-व्यंग्य महत्त्वपूर्ण है।

*** पंचम अध्याय - ''हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में पुणतांबेकर का योगदान'' :**

पंचम अध्याय में पुणतांबेकर के समकालीन कुछ प्रतिनिधि एकांकीकारों के एकांकी तथा नाटक साहित्य का परिचय देते हुए हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में शंकर पुणतांबेकर

के योगदान को स्पष्ट किया है। रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ 'अश्क' आदि प्रतिनिधि एकांकीकार तथा अप्रत्यक्ष रूप से नाट्य साहित्य में योगदान देनेवाले हरिशंकर परसाई ('रानी नागफणी की कहानी' का 'लंगडी टांग' नाम से किया गया नाट्यावलोकन) तथा श्रीलाल शुक्ल ('राग दरबारी' उपन्यास का 'रंगनाथ की वापसी' नाम से किया गया नाट्यावलोकन) का परिचय दिया गया है। गिरीश रास्तोगी ने 'राग दरबारी' उपन्यास का नाट्यावलोकन किया है तथा उनका भी अप्रत्यक्ष योगदान कहा जा सकता है।

उपर्युक्त एकांकिकारों के एकांकियों के और शंकर पुणतांबेकर के एकांकियों के अध्ययन के उपरांत स्पष्ट हुआ है कि अन्य एकांकिकारों ने अपने एकांकियों में समस्याओं को उद्घाटित किया है, तो पुणतांबेकर ने अपने एकांकियों में उन समस्याओं को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से उद्घाटित किया है। जिसके कारण पाठक समाज की, व्यक्ति की उन कमियों, विसंगतियों पर सोचने के लिए विवश होता है। हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल के साहित्य में 'रानी नागफणी की कहानी' तथा 'राग दरबारी' हास्य-व्यंग्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं लेकिन उनका नाट्यसाहित्य में रूपांतर किया गया है। अत: उनका योगदान अप्रत्यक्ष रूप में है। इन हास्य-व्यंग्य एकांकिकारों में पुणतांबेकर का योगदान उल्लेखनीय है।

❑ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. यह व्यंग्यकार शंकर पुणतांबेकर के हास्य-व्यंग्य एकांकियों पर किया गया पहला अनुसंधान है।
2. हास्य-व्यंग्य का सैद्धांतिक स्वरूप इस लघु शोध-प्रबंध में संक्षेप में स्पष्ट किया है।
3. एकांकियों के हास्य-व्यंग्य के स्वरूप को भी इसमें स्पष्ट किया है।
4. विवेच्य एकांकियों पर हास्य-व्यंग्य के प्रभाव को देखते हुए उसके मूल्य को स्पष्ट किया है।
5. विवेच्य एकांकियों के कथ्य एवं शिल्प पर प्रकाश डाला है।
6. अन्य समकालीन एकांकीकारों और शंकर पुणतांबेकर के योगदान को स्पष्ट किया है।

शंकर पुणतांबेकर के एकांकियों पर प्रस्तुत किया हुआ यह पहला अनुसंधान है। इसमें विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य की प्रवृत्ति का अनुशीलन पहली बार किया गया है। अत: प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध महत्त्वपूर्ण है।

* * * *

ऋणनिर्देश

"मेरे मंमी – पापा
तथा
चि. विनायक और अर्चना
के
स्नेह का फल"

इनके स्नेह का ऋण मुझ पर सदैव बना रहे ...

इन सभी को भूलना असंभव...

इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्णत्व तक पहुँचाने में जिन व्यक्तियों का मुझे सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझती हूँ।

सर्व प्रथम मेरे आदरणीय गुरुवर्य **डॉ. मोहन जाधव सर जी** का आभार प्रकट करती हूँ। आपने अपना अमूल्य समय देकर मुझे जो मार्गदर्शन किया है, उसके ऋण शब्दों में व्यक्त करना असंभव है। मेरा यह लघु शोध-प्रबंध आपके सफल मार्गदर्शन एवं निरंतर प्रेरणा का ही फल है। आपके परिवार के सभी सदस्यों द्वारा मिले सहयोग के लिए भी मैं उन सबकी सदैव आभारी रहूँगी। आपके मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं आत्मीय सहयोग का ऋण मुझ पर आजन्म बना रहेगा।

हमारे विभागाध्यक्ष आदरणीय **डॉ. अर्जुन चव्हाण सर जी** के ऋण मुझ पर सदैव बने रहेंगे। आपका हर वाक्य मुझे नई दिशा का पथ प्रदर्शन करता रहा है। आपने समय-समय पर मेरी शंकाओं को दूर करने के लिए जो अपना अमूल्य समय दिया, उसके लिए मैं आपकी सदैव ऋणी रहूँगी।

हिंदी विभाग के अध्यापक वर्ग के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। **डॉ. पी.एस्. पाटील, डॉ. पद्मा पाटील, डॉ. निंबाळकर मॅडम, डॉ. आशा मणियार, डॉ. भारती शेळके, श्रीमती उत्तरा कुलकर्णी** और **श्री. शाहजान मणेर** आदि से मुझे जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन मिला, इसके लिए मैं इन सब की आभारी हूँ। **डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी मॅडम जी** का स्नेह और मार्गदर्शन मुझे मिला इसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ।

हमारे छ. शिवाजी कॉलेज, सातारा के **सौ. माने मॅडम, सौ. खान मॅडम, सौ. पठाण मॅडम, सौ. पिंजारी मॅडम, सौ. सुर्वे मॅडम** तथा एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा के **डॉ. सगरे सर** और सद्गुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड के **डॉ. एस.व्ही. निकम सर** आदि की मैं सदैव ऋणी रहूँगी।

जिनकी प्रबल इच्छा और असीम स्नेह के कारण मैं यह शोध-कार्य पूरा कर सकी वे मेरे पापा **श्री. धनंजय चव्हाण** और मंमी **सौ. विजयमाला चव्हाण** तथा भाई **चि. विनायक** और बहन **कु. अर्चना**, मेरे मामाजी **श्री. मनोहर कोरे** और **श्री. दिलीपकुमार**

कोरे तथा मामी जी **सौ. मिना कोरे** और **सौ. दिपाली कोरे** इन सब की मैं सदैव ऋणी रहूँगी। मेरी मौसी **सौ. सुमन राजमाने, सौ. मंगल सूर्यवंशी** और मौसा जी **श्री. बापू राजमाने, श्री. नाथाजी सूर्यवंशी** आदि की भी आभारी हूँ। मेरे प्यारे नाना जी **श्री. गोपाळ कोरे** और नानी **सौ. सजाबाई कोरे** तथा दादी **श्रीमती वत्सला चव्हाण** आदि का स्नेह मेरे लिए अमूल्य नीधि है। इन सभी के कारण मैं आज अपना एम्.फिल. शोध-कार्य पूरा कर पाई हूँ।

आदरणीय **डॉ. शंकर पुणतांबेकर** और **डॉ. सुरेश माहेश्वरी** के सहयोग तथा मार्गदर्शन के लिए मैं सदैव उनकी आभारी रहूँगी।

जिनके व्याख्यानों से हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहायता हुई है उन **डॉ.कट्टिमणि जी, डॉ.रोहिताश्व जी, डॉ.रतनकुमार पांडे जी, डॉ.केशव प्रथमवीर जी, डॉ. तिवारी जी** आदि सभी के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। इन सभी के व्याख्यान सुनने का अवसर हमें प्रदान किया इसलिए **डॉ. चव्हाण सर जी** की भी आभारी हूँ।

मेरे गुरूबंधू एवं हितचिंतक **श्री. अशोक मरळे जी, श्री. किरण देशमुख जी, श्री. राजेंद्र बाबर जी** आदि के सहयोग के लिए मैं उनकी सदैव आभारी रहूँगी। साथ ही **शैलजा कांबळे, सुषमा पाटील, संगीता गवळी** तथा **अर्चना जाधव** आदि की भी मैं सदैव आभारी रहूँगी।

मेरे मित्र तथा हितचिंतक **दिपक तुपे, वालचंद नागरगोजे** का इस शोध-कार्य में मुझे महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला। इन दोनों के तथा **दत्तात्रय पतंगे, प्रकाश मुंज, प्रविण चौगुले, प्रकाश कोपार्डे, अमोल जमने** तथा **दत्तात्रय पवार** आदि के सहयोग के बिना मैं अपना शोध-कार्य समय पर पूरा नहीं कर पाती। साथ ही छाया के समान मेरे सुख-दु:ख में मेरा साथ देनेवाली मेरी सहेलियाँ **सुषमा, शैलजा, छाया, मिनाक्षी मॅडम, रिना, प्रगति, वर्षा, सुनयना, विद्या, स्मिता, नीता, कांता, संगीता, नागीन, माधुरी, अर्चना, स्मिता, शिला** और मेरी ज्यूनिअर **वैशाली, सुनिता** तथा **सिमांजली** और **पल्लवी** इन सभी को भूलना असंभव है। हिंदी विभाग के क्लर्क **श्री. कोळेकर सर** तथा **श्री. चांदणे (मामा)** इनकी भी आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के 'मागेल त्यांना काम' इस योजना के अंतर्गत काम करने का अवसर मुझे मिला इसलिए मैं **शिवाजी विश्वविद्यालय** तथा **पात्रता विभाग** के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

छत्रपति शिवाजी कॉलेज (सातारा), के.बी.पी.कॉलेज (पंढरपुर), एल.बी.एस. कॉलेज (सातारा), महावीर कॉलेज (कोल्हापुर) तथा **शिवाजी विश्वविद्यालय के 'बॅ.बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय'** से मुझे आवश्यक ग्रंथ संपदा प्राप्त हुई इसलिए मैं इन सभी ग्रंथालयों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रबंध के संगणक मुद्रण का काम **श्री.** तथा **सौ. सावंत, अक्षर टायपिंग** द्वारा योग्य समय पर पूर्ण होकर मिला इसलिए उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

उपर्युक्त सभी का तथा इस शोध-कार्य में मुझे जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग मिला उन सभी का आभार व्यक्त करते हुए मैं अत्यंत विनम्रतापूर्वक अपना यह लघु शोध-प्रबंध विद्वानों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

(कु. रुपाली धनंजय चव्हाण)
शोध-छात्रा